Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJIF 2016 = 4.44, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.48612, AUG-SEPT 2017, VOL- 4/23

कार्ल मार्क्स के दर्शन की वर्तमान प्रासंगिकता

गुणवंत सोनोने, Ph. D.

gunwantsonone7@gmail.com

Abstract

कार्ल मार्क्स के विचार एवं सिद्धांतो की नींव 'दुःख' या 'शोषण' है | समता या साम्यवाद (समता) प्रस्थापित करने के लिए निजी संपत्ति का त्याग कार्ल मार्क्स को मान्य है | शोषण रहित समाज का निर्माण करना उनका उद्देश्य है | कार्ल मार्क्स को वर्ग-द्वंद्व की विद्यमानता मान्य है | दुःख या शोषण के विभिन्न कारणों में से भूक और गरीबी कारण माना है | कार्ल मार्क्स हिंसा द्वारा स्थापित सर्वहारा तानाशाही का स्वीकार करते है | कार्ल मार्क्स द्वारा स्थापित साम्यवाद, समाजवाद, सर्वहारा तानाशाही आदि मूल्यं वर्त्तमान समय में पूर्णत: शाश्वत वैश्विक मूल्यं नहीं रहे | शोषण, जातीयता, आत्महत्या, बेरोजगारी, भुखमरी, हिंसा, आतंकवाद, युद्ध को पूर्णता समाप्त कर शाश्वत विश्व कल्याण के लिए कार्ल मार्क्स का दर्शन ही उपयुक्त नहीं है, किन्तु कार्ल मार्क्स के कुछ मौलिक विचार वैश्विक एवं शाश्वत विकास के लिए वर्तमान समाज में आज भी प्रासंगिक है |

सार शब्द : विचार एवं सिद्धांतो की नींव, दुःख, शोषण, समता, साम्यवाद, वर्ग-द्वंद्व, वर्ग - संघर्ष, हिंसा, सर्वहारा तानाशाही, शाश्वत वैश्विक मूल्यं, विश्व कल्याण, कार्ल मार्क्स के दर्शन, वर्तमान प्रासंगिकता.....

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना :

मानव समाज में कूछ लोग सशक्त, बलशाली, धनवान एवं शातिर और कुछ लोग कमजोर, बलहीन एवं धनहीन होना यह प्राचीन से लेकर वर्तमान समाज का इतिहास है | बलवान वर्ग बलहीन

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वर्गोका शोषण, दोहन, उत्पीडन, अन्याय, अत्याचार करता है | शोषितों के जीवन से अज्ञान, अंधविश्वास, पाखण्ड आदि को समाप्त करके वैज्ञानिक दृष्टिकोण निर्माण करना आवश्यक है | कार्ल मार्क्स के विचारों से प्रेरणा लेकर हम शोषणरहित, वर्गविहीन भेदभावविरहित समाज की निर्मिती कर सकते है | उक्त संदर्भ में कार्ल मार्क्स के विचार वर्तमान काल में प्रासंगिक है |

कार्ल मार्क्स के दर्शन की वर्तमान प्रासंगिकता :

विचार एवं सिद्धांतो की नींव :

कार्ल मार्क्स के विचार एवं सिद्धांतो की नींव दुःख या शोषण है | शोषण की जगह दुःख को पढ़े तो कार्ल मार्क्स गौतम बुद्ध से दूर नहीं है | कार्ल मार्क्स के जन्म के 2400 वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध ने यह जीवन का वास्तविक कथन किया था | मानव के जीवन से आज भी शोषण और दुःख खत्म नहीं हुआ है | वर्तमान समाज से मानव को शोषण एवं दुःख मुक्त करना हमारा प्रधान दाईत्व होना चाहिए |

संपत्ति :

कार्ल मार्क्स के अनुसार, शोषण को रोखने के लिए संपत्ति (जमीन, कारखाने आदि) का मालिक 'राज्य' हो | इससे कोई निजी मालक श्रमिकोंद्वारा उत्पादित वस्तु का लाभ हडप नहीं सकेगा | समता या साम्यवाद प्रस्थापित करने के लिए निजी संपत्ति का त्याग कार्ल मार्क्स को मान्य है | भारत की स्वाधीनता के उपरांत मिश्र अर्थव्यवस्था एवं नियोजन व्यवस्था को स्वीकृत किया था, जिसका उद्देश्य आर्थिक एवं सामाजिक असमानता नष्ट करके आर्थिक एवं सामाजिक समानता प्रस्थापित कराना था | विवश होकर हमें यह सत्य कहना पड़ता है की, हम आज भी इसमे सफल नहीं हो पाए है |

सामाजिक शोषण :

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अमिर गरीबोंका शोषण कर उन्हें गुलाम बना देते है | यही गुलामी कष्ट, दुःख एवं गरीबी का कारण बनती है | मार्क्स के अनुसार, श्रमिकों का शोषण, उत्पीडन, अन्याय एवं अत्याचार सामाजिक एवं आर्थिक भेदभाव से होता है| पूंजीपति पूंजी की सहायता से श्रमिकों का शोषण करते है | संविधानिक कानून के तहत गुलाम बनाना अपराध माना गया है | संविधान की सहायता से सामाजिक शोषण को प्रतिबंधित किया गया है | समाज में रोजमर्हा घटित सामाजिक शोषण की घटनायें सामाजिक शोषण समाप्त नहीं हुआ है यही दर्शाती है | समाज को शोषण मुक्त करना हर देशवाशियों की जबाबदेही है |

शासन व्यवस्था :

कार्ल मार्क्स हिंसा द्वारा स्थापित सर्वहारा तानाशाही का स्वीकार करते है | यह शासन व्यवस्था व्यक्ति के राजनैतिक (विधायिका में प्रतिनिधित्व, मताधिकार आदि) अधिकारोंसे वंचित रखता है | जनता सत्ता की भागीदार न रहते हुए शासित होती है | लोकतान्त्रिक व्यवस्था की तुलना में निरंकुश व्यवस्था में शोषण एवं उत्पीडन के ज्यादा आसार होते है | समानता, न्याय, स्वतंत्रता, बंधुता आदि मूल्यों पर अधिष्ठित शोषण रहित समाज की स्थापना करना वर्तमान काल की प्रासंगिकता है | विश्व के अधिकतर देशों ने लोकशाही शासनव्यवस्था का स्वीकार किया है | आज हमें लोकशाही मूल्यों को जीवन मूल्य के स्तर पर स्वीकृत करना अनिवार्य है |

शाश्वत वैश्विक मूल्यं :

कार्ल मार्क्स ने साम्यवाद, समाजवाद, सर्वहारा तानाशाही आदि मूल्यों को अधिष्ठित किया | लेकिन वर्त्तमान समय वह पूर्णत: शाश्वत वैश्विक मूल्यं नहीं रहे | कार्ल मार्क्स द्वारा दिग्दर्शित उक्त मूल्य आज के वर्तमान समाज में शाश्वत नहीं है | प्रज्ञा, शिल, करुणा, मैत्री, अहिंसा, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, बंधुता आदि विश्व कल्याणमय मूल्य वर्त्तमान समय में भी वैश्विक शाश्वत मूल्य है |

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भूक और गरीबी :

कार्ल मार्क्स ने वर्ग - संघर्ष के विभिन्न कारणों में गरीबी यह भी कारण बताया है | जिससे समाज में शोषण एवं उत्पीडन पैदा होते है | इस सन्दर्भ में संत कबीर कहते है |

"न कुछ देखा भाव - भाजन में, न कुछ देखा पोथी में |

कहें कबीर सुनो भाई सन्तों, जो देखा सो रोटी में |"

आज के वर्तमान समाज को गरीबी मुक्त बनाना हम सभी का दाईत्व है | भारत भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने गरीबी मुक्त भारत का स्वप्न देखा था, लेकिन आज तक पूरा नहीं हुआ है | विभिन्न राष्ट्रों की सरकार गरीबी हटाने के प्रयासरत है | इस दिशा में कार्ल मार्क्स के विचार वर्तमान समय में प्रासंगिक है |

मार्ग या साधन :

कार्ल मार्क्स शोषण, अन्याय, अत्याचार, गरीबी, दुःख आदि से मुक्ति पाने के लिए वर्गसंघर्ष अर्थातच हिंसा, हत्या का मार्ग अपनाते है | मार्क्स साम्यवाद के निर्माण के लिए हिंसा और सर्वहारा की तानाशाही का साधन रूप स्वीकार करते है | कार्ल मार्क्स के अनुसार, शोषण को समाप्त करने के लिए निजी संपत्ति समाप्त की जाए | निजी संपत्ति का मालिक श्रमिकोंद्वारा उत्पादित वस्तु का लाभ हडप लेता है | इस समस्या के उपाय के लिए उन्होंने 'एकमात्र मालिकी राज्य' एवं 'सर्वाहारा तानाशाही' का पुरस्कार किया है | सर्वहारा तानाशाही का अर्थ है की, सरकार शोषक वर्ग की न होकर शोषित वर्ग की हो | उक्त विचारधारा पर आधिष्टित रूस एवं चायना की शासनव्यवस्था भी इस उद्देश्य में सफल नहीं हुए है | नैतिक शिक्षा यह वर्तमान समय में प्रभावी एवं महत्वपूर्ण मार्ग या साधन सिद्ध हुआ है |

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वर्ग द्वंद्व या वर्ग-संघर्ष :

मार्क्स के अनुसार वर्ग- वर्ग के बिच हितों को लेकर द्वंद्व है | कार्ल मार्क्स के अनुसार, वर्ग - संघर्ष के मार्ग से श्रमिको के शोषण को बचाया जा सकता है | कार्ल मार्क्स का वर्ग – संघर्ष का सिद्धांत मुलत: हिंसा पर आधारित था | श्रमिकोंका शोषण ख़त्म करने के लिए श्रमिक एवं पूंजीपतियों में संघर्ष होना था | इस वर्ग - संघर्ष के कारण मानव हिंसा संभव थी | इस वर्ग - संघर्ष सिद्धांतो के अनुसार एक बुराई को ख़त्म करने के लिए दूसरी बुराई करना होता है, यह उचित नहीं है | उचित साध्य के लिए अनुचित साधन को मार्क्सवाद उचित मानता है यह कतई उचित नहीं है | वर्ग - वर्ग संघर्ष एवं शोषक-शोषित संघर्ष को समाप्त करने के लिए हिंसा का प्रयोग करना आज के वर्तमान समय में उचित नहीं है |

उपसंहार :

विश्व में कार्ल मार्क्स का नाम सन्मान से लिया जाता है | मार्क्स को भौतिकवादी एवं प्रकृतिवादी दार्शनिक एवं वैज्ञानिक कहा जाता है | अधिकांश यूरोपीय देशोंके लोग कार्ल मार्क्स को मसीहा मानते थे | मार्क्स के सिद्धांतो ने विश्व की तत्कालीन विचारधाराओं को अपने ओर आकर्षित किया | सोवियत रूस और चीन पर मार्क्स के विचारों का काफी प्रभाव रहा है | आदर्शवादी, आध्यात्मवादी, आत्मवादियों के अनुसार मनुष्य का शोषण पूर्व जन्मो के कारण होता है इससे कार्ल मार्क्स सहमत नही थे | कार्ल मार्क्स के दर्शन पर अधिष्ठित विचार एवं सिद्धांतो का क्रियान्वयन सोवियत रूस और चीन में हुवा | कुछ काल उपरांत कार्ल मार्क्स के विचार एवं सिद्धांतो के क्रियान्वयन के मार्ग एवं साधनों में कमियां दिखने लगी | सोवियत रूस और चीन में कार्ल मार्क्स के विचारों कों काफी सफलता मिलने उपरांत रशिया विभजित हुवा | यह कार्ल मार्क्स के विचारों एवं सिद्धांतो का पराजय है |

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सामाजिक एवं आर्थिक शोषण, उत्पीडन, अन्याय एवं अत्याचार को समाप्त करने के लिए कार्ल मार्क्स हिंसा के अनुशीलन की बात प्रमुखता से रखता है | शोषण, जातीयता, आत्महत्या, बेरोजगारी, भुखमरी, हिंसा, आतंकवाद, युद्ध को पूर्णता समाप्त कर शाश्वत विश्व कल्याण के लिए कार्ल मार्क्स का दर्शन ही उपयुक्त नहीं है, किन्तु कार्ल मार्क्स के कुछ मौलिक विचार वैश्विक एवं शाश्वत विकास के लिए वर्तमान समाज के लिए आज भी प्रासंगिक है | कार्ल मार्क्स के विचारों का प्रभाव विश्व के आधिकतर देशों पर आधिक समय पर रहा है| सोवियत रूस एवं सोवियत चीन ने अपनी शासन व्यवस्था नीव कार्ल मार्क्स के सिधान्तो पर रखी थी | मार्क्सवादी विचारों की कमियों के कारण वर्तमान समय में उपयुक्तता एवं सार्थकता कम हुई है |

शोषण एवं दुःख मुक्त समाज का निर्माण कराना, आर्थिक एवं सामाजिक समानता प्रस्थापित कराना, समाज को शोषण मुक्त कराना, भूक एवं गरीबी मुक्त समाज का निर्माण करना आदि उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लोकशाही मूल्यों को जीवन मूल्य के स्तर पर स्वीकृत करना, प्रज्ञा, शिल, करुणा, मैत्री, अहिंसा, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, बंधुता आदि विश्व कल्याणमय मू ल्योंको वर्त्तमान समय में वैश्विक शाश्वत मूल्य बनाना, वर्ग - वर्ग संघर्ष एवं शोषक-शोषित संघर्ष को समाप्त करने के लिए हिंसा का प्रयोग न करना, नैतिक शिक्षा का मार्ग या साधन के रुप में प्रभावी ढंग से उपयोग करना उचित होगा |

सन्दर्भ :

अम्बेडकर, बी. आर., शीलप्रिय बौद्ध (अनुवादक), (2010) , "बुद्ध और कार्ल मार्क्स", दिल्ली, सम्यक प्रकाशन |
कारखानीस, सरला, (2008), "कार्ल मार्क्स", मुम्बई, लोकवांडमय गृह |
जाटव, डी. आर., (2015), "डॉ.अम्बेडकर और मार्क्सवाद", जयपुर, समता साहित्य सदन |
जाटव, डी. आर., (2003), "भगवान बुद्ध और कार्ल मार्क्स", जयपुर, समता साहित्य सदन |
सांस्कृत्यायन, राहुल, (2015), "कार्ल मार्क्स", पटना, किताब महल |

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies